अष्टमः पाठः - सूक्तयः (पद्य)

1. पाठ परिचय

यह पाठ तमिल भाषा के प्रसिद्ध ग्रन्थ **'तिरुक्कुरल'** पर आधारित है, जिसके रचयिता तिरुवल्लुवर हैं। 'तिरुक्कुरल' को तमिल साहित्य का वेद माना जाता है। इसमें जीवन के उच्च आदर्शों और नैतिकता की शिक्षा दी गई है।

2. मुख्य श्लोक एवं भावार्थ

पिता का उपहार: पिता अपने पुत्र को बचपन में सबसे महान धन 'विद्या' (Education) देता है। जब पुत्र विद्वान बन जाता है, तो लोग कहते हैं कि 'इसके पिता ने न जाने कितना बड़ा तप (तपस्या) किया होगा'। यही पिता के प्रति सच्ची कृतज्ञता है।
सच्ची सज्जनता: जैसी सरलता (सीधापन) हमारे मन में होती है, वैसी ही सरलता हमारी वाणी (बातों) में भी होनी चाहिए। मन और वाणी की इसी समानता को महापुरुषों ने 'सच्ची सज्जनता' (ऋजुता) कहा है।
कठोर वचन: जो व्यक्ति धर्म से युक्त मीठी वाणी को छोड़कर कठोर (कड़वी) वाणी बोलता है, वह एक ऐसे मूर्ख के समान है जो पके हुए मीठे फल को छोड़कर कच्चा और कड़वा फल खाता है।
सच्चे नेत्र: इस संसार में केवल 'विद्वान' लोगों को ही आँखों वाला (ज्ञानवान) माना गया है। अज्ञानी लोगों के चेहरे पर जो आँखें हैं, वे केवल नाममात्र की आँखें हैं।
सदाचार (सर्वोच्च धर्म): अच्छा आचरण (सदाचार) ही मनुष्य का सबसे पहला धर्म है। इसलिए मनुष्य को अपने प्राण देकर भी सदाचार की रक्षा करनी चाहिए।

© 2026 schorbit.com. All rights reserved.
Prepared exclusively for Schorbit Students